❍ 20 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *आत्माओं को योगी बनाने की सेवा की ?*

➢➢ *पूरा पूरा नश्तोमोहा बनकर रहे ?*

➢➢ *कल्प कल्प की विजय की नूंध को स्मृति में रख सदा निश्चिंत रहे ?*

➢➢ *सदा ख़ुशी की खुराक द्वारा ख़ुशी के खजाने से संपन्न रहे ?*

―――――――――――――――――――――

✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ

〰✧ *अभी आप बच्चों को दो प्रकार के कार्य करने हैं-एक तो आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, दूसरा धरणी को भी तैयार करना है। इसके लिए विशेष वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्र गति देनी पड़ेगी क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा,* तब तैयार होंगे। वाणी और वृत्ति दोनों साथ-साथ सेवा में लगे रहें।

✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ••☆••✧゚ﾟ

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

꧁°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

꧁°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

꧁°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं मालिकपन और बालकपन के नशे में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा मालिकपन और बालकपन के नशे में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? *जब चाहो मालिकपन की स्थिति में स्थित हो जाओ और जब चाहो तो बालकपन की स्थिति में स्थित हो जाओ-ऐसा अनुभव है? या जिस समय बालक बनना हो उस समय मालिक बन जाते और जिस समय मालिक बनना हो उस समय बालक बन जाते?* जब चाहो, जैसे चाहो वैसी स्थिति में स्थित हो जाओ-ऐसे है? क्योंकि यह डबल नशा सदा ही निर्विघ्न बनाने वाला है। जब भी कोई विघ्न आता है तो उस समय जिस स्थिति में स्थित होना चाहिए, उसमें स्थित न होने कारण विघ्न आता है।

〰✧ विघ्न-विनाशक आत्मायें हो या विघ्न के वश होने वाली हो? सदैव यह स्मृति में रखो कि हमारा टाइटल ही है 'विघ्नविनाशक'। विघ्न-विनाशक आत्मा स्वयं कैसे विघ्न में आयेगी? चाहे कोई कितना भी विघ्न रूप बनकर आये लेकिन आप विघ्न विनाश करेंगे। *सिर्फ अपने लिये विघ्न-विनाशक नहीं हो लेकिन सारे विश्व के विघ्न-विनाशक हो। विश्व-परिवर्तक हो। तो विश्व-परिवर्तक शक्तिशाली होते हैं ना।* विघ्न को कमजोर बनाने वाले हो, स्वयं कमजोर बनने वाले नहीं। अगर स्वयं कमजोर बनते हो तो विघ्न शक्तिशाली बन जाता है और स्वयं शक्तिशाली हो तो विघ्न कमजोर बन जाता है।

~✧ तो सदा अपने मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप की स्मृति में रहो। सुना तो बहुत है, बाकी क्या रहा? बनना। सुनने का अर्थ ही है बनना। तो बन गये हो? बाप भी ऐसे शक्तिशाली बच्चों को देख हर्षित होते हैं। लौकिक में भी बाप को कौनसे बच्चे प्यारे लगते हैं? जो आज्ञाकारी, फालो फादर करने वाले होंगे। तो आप कौन हो? फालो फादर करने वाले हो। *फालो करना सहज होता है ना। बाप ने कहा और बच्चों ने किया। सोचने की भी आवश्यकता नहीं। करें, नहीं करें, अच्छा होगा, नहीं होगा-यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं। फालो करना सहज है ना। हर कर्म में क्या-क्या फालो करो और कैसे करो-यह भी सभी को स्पष्ट है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~✧ साइंस की शक्ति के अनुभव हो? *साइंस की शक्ति से विनाश, साइलेंस की शक्ति से स्थापना।* तो ऐसे समझते हो कि हम अपनी साइलेंस की शक्ति द्वारा स्थापना का कार्य कर रहे हैं। हम ही स्थापना के कार्य के निमित है तो *स्वयं साइलेंस रूप में स्थित रहेंगे तब स्थापना का कार्य कर सकेंगे।* अगर स्वयं हलचल में आते तो स्थापना का कार्य सफल नहीं हो सकता। की शक्ति के अनुभवी हो?

~~✧ कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरूप होकर शान्ति की किरणें दो तो अशान्त भी शान्त हो जाए। *शान्ति स्वरूप रहना अर्थात शान्ति की किरणें सबको देना।* यही काम है। विशेष शान्ति की शक्ति को बढाओ। *स्वयं के लिए भी औरों के लिए भी शान्ति के दाता बनो।* भक्त लोग शान्ति देव कहकर याद करते हैं ना? देव यानी देने वाले। जैसे बाप की महिमा है शान्ति दाता, वैसे *आप भी शान्ति देवा हो। यही सबसे बड़े ते बडा महादान है।*

~~✧ जहाँ शान्ति होगी वहाँ सब बातें होंगी। तो सभी शान्ति देवा हो, अशान्त वातावरण में रहते स्वयं भी शान्त स्वरूप और सबको शान्त बनाने वाले, जो बापदादा का काम है, वही बच्चों का काम है। *वापदादा अशान्त आत्माओं को शान्ति देते हैं तो वच्चों को भी फॉलो फादर करना है।* व्राह्मणों का धन्धा ही यही है। अच्छा। (पार्टियों के साथ)

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

~~✧ *यह (अपसेट होना) निशानी है तख्तनशीन अर्थात् तख्त पर सेट न होने की। तख्तनशीन आत्मा को व्यक्ति तो क्या लेकिन प्रकृति भी अपसेट नहीं कर सकती। माया का तो नाम निशान ही नहीं। तो ऐसे तख्तनशीन ताजधारी वरदानी आत्मायें होना।*

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⁺˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी सेना बन, विश्व के रक्षक होने के शुद्ध नशे में रहना"*

➳ _ ➳ मीठे मधुबन के शांति स्तम्भ की शांत तरंगो में एकांत में बेठ... मीठे बाबा के प्यार में मगन, मै आत्मा अपने ज्ञान धन को निहार रही हूँ, और सोच रही हूँ... कितने अथाह खजानो से मीठे बाबा ने मुझे भर कर धनवान् बना दया है... *इतनी अमीरी से सजाकर भगवान ने जनमो की तपस्या का फल दे दिया है.*. और सामने बाबा कब से खड़े मेरे मन भावो को पढ़ते पढ़ते मुस्कराते जा रहे है...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा में महान भाग्य की अनुभूतियों को जगाते हुए बोले :-* " मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर पिता द्वारा पसन्द किये गए, भाग्यवान फूल हो... और रूहानी सेना बनकर मुस्करा रहे हो... *ईश्वरीय याद द्वारा असीम शक्तियो स्वयं में भरकर विश्व रक्षक हो गए हो.*.. सर्व आत्माओ को आप समान सुखी बना रहे हो..."

➳ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के ज्ञान रत्नों को पाकर ख़ुशी से झूम रही हूँ

और कह रही हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... *आपसे पायी जिन खुशियो में मै आत्मा मुस्करा रही हूँ..*. उन्ही खुशियो को हर दिल पर दिल खोल कर लुटा रही हूँ... सबके जीवन को विकारो से मुक्त कराकर... सच्चे सुख शांति को आपसे दिलवा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा अपने सारे खजाने मुझ पर लुटाते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे... ईश्वरीय बाँहों में रूहानी सेना बनकर पूरे विश्व का कल्याण करने वाले हो... *अपने इस भाग्य को बार बार स्मृति में रखकर शुद्ध नशे से भर जाओ..*. श्रीमत पर चलकर रावण राज्य का सफाया कर... सुखो भरा रामराज्य लाने वाले महान भाग्यवान हो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने प्यारे बाबा और अपने महान भाग्य की स्मृति में खोयी हुई कह रही हूँ :-* "प्राणप्रिय बाबा मेरे... देह समझ कर सदा असुरक्षित थी.. और *आत्मिक स्वरूप में कितनी निश्चिन्त और निर्भय बन गयी हूँ..*. माया के हर वार से सावधान होकर... सबकी रक्षा करने वाली रूहानी सेना बन मुस्करा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को रूहानी नशे से भरते हुए ज्ञान वर्षा में भिगो रहे है और कह रहे है :-* "प्यारे सिकीलधे बच्चे मेरे... रूहानी सेना बनकर विश्व धरा को सुखो की बगिया बनाओ... सबको विकारो रुपी रावण से मुक्त कराकर देवताई राज्य भाग्य दिलवाओ... *ईश्वरीय खजानो के मालिक बनाकर, सबके दामन में असीम खुशियो को सजाओ..*."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने भाग्य की खूबसूरती पर मोहित होकर मीठे बाबा से कहती हूँ :-* "प्यारे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपसे अथाह शक्तियाँ पाकर पूरे विश्व में सुख शांति की मीठी बयार ला रही हूँ..*. ज्ञान रत्नों को अपनी झोली से छलका कर.. सबको ज्ञान सागर पिता का दीवाना बना रही हूँ..." मीठे बाबा से प्यार भरी रुहरिहानं कर मै आत्मा स्थूल जग में आ गयी...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ ∗"ड्रिल :- पूरा-पूरा नष्टोमोहा बनना है∗"

➳ _ ➳ देह और देह की दुनिया से डिटैच हो कर, अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो कर मैं मन बुद्धि रूपी नेत्रों से स्वयं को देख रही हूं। इस देह से उपराम, भृकुटि सिहांसन पर विराजमान मैं एक चमकती हुई मणि हूँ। ∗अपने इस वास्तविक स्वरूप में स्थित होते ही मैं स्वयं को लगावमुक्त अनुभव कर रही हूं। देह और देह से जुड़ी हर वस्तु से जैसे मैं अनासक्त हो गई हूँ∗। संसार के किसी भी पदार्थ में मुझे कोई आसक्ति नही। इस नश्वर संसार से अनासक्त होते ही एक बहुत प्यारी और हल्की स्थिति का अनुभव मैं कर रही हूं। ऐसा लग रहा है जैसे देह और देह के सम्बन्धो की रस्सियों ने मुझ आत्मा को बांध रखा था इसलिए मैं उड़ नही पा रही थी लेकिन अब मैं सभी बन्धनों से मुक्त हो गई हूँ।

➳ _ ➳ बन्धनमुक्त हो कर अब मैं आत्मा इस देह से निकल कर चली ऊपर की ओर। आकाश के पार मैं पहुंच गई फरिश्तों की दुनिया में। फरिश्तों की इस दुनिया मे पहुंच कर अपने सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण पावन फ़रिशता स्वरूप को मैने धारण कर लिया। ∗अब मैं फ़रिशता देख रहा हूँ स्वयं भगवान अपने लाइट माइट स्वरूप में मेरे सम्मुख हैं। उनकी पावन दृष्टि जैसे जैसे मुझ फ़रिश्ते पर पड़ रही है मैं फ़रिशता अति तेजस्वी बनता जा रहा हूँ∗। बापदादा की शक्तिशाली किरणे मोती बन कर मेरे ऊपर बरस रही हैं और हर मोती से निकल रही रंग बिरंगी शक्तियों की किरणें मुझे शक्तिशाली बना रही हैं। बापदादा की लाइट माइट मुझ फ़रिश्ते में समा कर मुझे डबल लाइट बना रही है।

➳ _ ➳ अपने इसी लाइट माइट स्वरूप में मैं फ़रिशता अब वापिस धरती की ओर लौट रहा हूँ। अब मैं सम्पूर्ण लगावमुक्त हूँ, विरक्त हूँ। संसार के सब प्रलोभनों से ऊपर हूँ। *देह की आकर्षण से मुक्त, देह के सम्बन्धो और देह से जुड़ी सभी इच्छाओं से मुक्त मैं फ़रिशता अब अपनी साकारी देह में प्रवेश कर रहा हूँ*।

➳ _ ➳ अब मैं देह में रहते हुए भी निरन्तर अव्यक्त स्थिति में स्थित हूँ। स्वयं को निरन्तर बापदादा की छत्रछाया के नीचे अनुभव कर रहा हूँ। *अब मेरे सर्व सम्बन्ध केवल एक बाबा के साथ हैं। मेरे हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म में केवल बाबा की याद समाई है*। बाबा की स्वर्णिम किरणों का छत्र निरन्तर मेरे ऊपर रहता है जो मुझे अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति से सदैव भरपूर रखता है।

➳ _ ➳ देह में रहते अव्यक्त स्थिति में स्थित होने के कारण अब मैं आत्मा स्वयं को सदा बाबा के साथ अटैच अनुभव करती हूं और उनकी लाइट माइट से स्वयं को हर समय भरपूर करती रहती हूँ। *साकारी देह में रहते हुए सम्पूर्ण नष्टोमोहा बन मैं अपने पिता परमात्मा के स्नेह में निरन्तर समाई रहती हूँ*। देह और देह की दुनिया से अब मेरा कोई रिश्ता नही।

➳ _ ➳ बाबा के प्रेम के रंग में रंगी मुझ आत्मा को सिवाय बाबा के और कुछ नजर नही आता। सुबह आंख खोलते बाबा, दिन की शुरुवात करते बाबा, हर संकल्प, हर बोल में बाबा, हर कर्म करते एक साथी बाबा, दिन समाप्त करते भी एक बाबा के लव में लीन रहने वाली मैं लवलीन आत्मा बन गई हूं। *मुख से और दिल अब केवल यही निकलता है "दिल के सितार का गाता तार - तार है, बाबा ही संसार मेरा, बाबा ही संसार है"*

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)

(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✳ *मैं कल्प कल्प के विजय की नूंध को स्मृति में रख सदा निश्चिन्त रहने वाली आत्मा हूँ।*
✳ *मैं निश्चयबुद्धि आत्मा हूँ।*
✳ *मैं विजयी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✳ *मैं आत्मा सदा खुशी की खुराक से तन्दरुस्त हूँ ।*
✳ *मैं आत्मा सदैव खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हूँ ।*
✳ *मैं खुशनुम: आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✳ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बेहद का बाप, बेहद का संकल्प रखने वाला है कि सर्व बच्चे बाप समान बनें। ऐसे नहीं कि मैं गुरू बनूँ और यह शिष्य बनें। नहीं, बाप समान

बन बाप के दिलतख्तनशीन बनें। यहाँ कोई गद्दीनशीन नहीं बनना है। वह तो एक दो बनेंगे लेकिन बेहद का बाप बेहद के दिलतख्तनशीन बनाते हैं। जो सर्व बच्चे अधिकारी बन सकते हैं। *सभी को एक ही जैसा गोल्डन चांस है। चाहे आदि में आने वाले हैं, चाहे मध्य में वा अभी आने वाले हैं। सभी को पूरा अधिकार है - समान बनने का अर्थात् दिलतख्तनशीन बनने का।* ऐसे नहीं कि पीछे वाले आगे नहीं जा सकते हैं। कोई भी आगे जा सकता है - क्योंकि यह बेहद की प्रॉपर्टी है। इसलिए ऐसा नहीं कि पहले वालों ने ले लिया तो समाप्त हो गई। *इतनी अखुट प्रॉपर्टी है जो अब के बाद और भी लेने चाहें तो ले सकते हैं। लेकिन अधिकार लेने वाले के ऊपर है।*

➳ _ ➳ क्योंकि अधिकार लेने के साथ-साथ अधीनता के संस्कार को छोड़ना पड़ता है। कुछ भी नहीं सिर्फ अधीनता है लेकिन जब छोड़ने की बात आती हो तो अपनी कमज़ोरी के कारण इस बात में रह जाते हैं और कहते हैं कि छूटता नहीं। दोष संस्कारों को देते कि संस्कार नहीं छूटता। लेकिन स्वयं नहीं छोड़ते हैं। क्योंकि चैतन्य शक्तिशाली स्वयं आत्मा है वा संस्कार है? *संस्कार ने आत्मा को धारण किया वा आत्मा ने संस्कार को धारण किया? आत्मा की चैतन्य शक्ति संस्कार हैं वा संस्कार की शक्ति आत्मा है? जब धारण करने वाली आत्मा है तो छोड़ना भी आत्मा को है, न कि संस्कार स्वयं छूटेंगे।* फिर भिन्न-भिन्न नाम देते - संस्कार हैं, स्वभाव है, आदत है वा नेचर है। लेकिन कहने वाली शक्ति कौन सी है? आदत बोलती है वा आत्मा बोलती है? तो मालिक है या गुलाम हैं? तो अधिकार को अर्थात् मालिकपन को धारण करना इसमें बेहद का चांस होते हुए भी यथा शक्ति लेने वाले बन जाते हैं। कारण क्या हुआ? कहते - मेरी आदत, मेरे संस्कार, मेरी नेचर। लेकिन मेरा कहते हुए भी मालिकपन नहीं है। अगर मेरा है तो स्वयं मालिक हुआ ना! ऐसा मालिक जो चाहे वह कर न सके, परिवर्तन कर न सके, अधिकार रख न सके, उसको क्या कहेंगे? क्या ऐसी कमजोर आत्मा को अधिकारी आत्मा कहेंगे?

✺ *"ड्रिल :- मालिकपन की स्मृति से अधीनता के संस्कारों को छोड़ बाप के दिलतख़्तनशीन बनकर रहना।"*

➳ ➳ देह रूपी रथ का रथी मैं आत्मा, देह सहित बैठ जाती हूँ बापदादा

के चित्र के सामने... और निहार रही हूँ अपलक उनकी आँखो में... *अखुट खजानों का द्वार खोलती उनकी आँखे, दिलतख्तनशीन बनने का आह्वान कर रही है...* धीरे धीरे मैं आत्मा अशरीरी अवस्था का अनुभव करती हुई... देह से अलग स्थित होकर साक्षी भाव से देख रही हूँ अपनी इस देह को... जो संगम पर पदमों की कमाई के निमित्त मुझे मिली है... मैं बाप के अखुट खजानों की अधिकारी आत्मा मन बुद्धि से बैठ गयी हूँ शान्ति स्तम्भ पर... ज्योति पुंज से आती शान्ति की किरणें मुझ आत्मा को शान्ति एवं गुणों के खजानों से भरपूर कर रही है...

➼ _ ➼ सूक्ष्मलोक के उडनखटोलें में बैठकर बापदादा आज उतर आये हैं उसी शान्ति स्तम्भ पर... मेरे चारों ओर घूमते असंख्य फरिश्ते... *पाण्डव भवन ही आज फरिश्तों का लोक नजर आ रहा है... नीचे नीचे घूमते फरिश्तों से टकराते बादल... और ये फरिश्ते खडे है मेरे चारों ओर घेरा बनाये... श्वेत बादलों का उडनखटोला पूनी के आकार में यहाँ वहाँ उडते बादल... और उडनखटोले की ध्वजा पर लहराते ज्ञान सूर्य शिव बाबा...* अब बापदादा चलकर आ रहे है मेरे करीब... मन्त्रमुग्ध सा होता हुआ मैं फरिश्ता खडा हो गया हूँ उनके अभिवादन में... आगे बढकर मेरे हाथ में सुन्दर उपहार थमा देते है, मैं मन ही मन सोच रहा हूँ उस उपहार के बारें में... तभी बापदादा मुझे उसी उडन खटोले में बैठने का आह्वान कर रहे हैं...

➼ _ ➼ हवा में उडते उडनखटोले में मैं और बापदादा सवार है... बापदादा के सामने स्वच्छ ताजे खुशबूदार फूलों का गुलदस्ता और उनके ऊपर मंडराती तितलियाँ देखकर मेरे मन में विचार उठते है... फूल अपनी खुशबू के मालिक है और तितली अपनी पंखों की, तो मैं आत्मा भी अपने संस्कारों की मालिक हूँ... अपने कमजोर संस्कारों की, आदतों की... तन पर पहने वस्त्रों को, गले में पहने हार को जब मैं उतार सकता हूँ तो मैं अपने संस्कारों को कमजोरियों को भी तो छोड सकता हूँ... उडनखटोलें की ध्वजा पर स्थित *ज्ञान सूर्य से आती तेज किरणें और मेरा दृढ होता संकल्प... इसी संकल्प के साथ गले में पहना कमी कमजोरियों का पुराना हार उतालकर दूर फेक देता हूँ मैं... खुश होकर बापदादा मुझे विजय माला पहनाकर मेरी ताजपोशी कर रहे है...*

➳ _ ➳ *सूक्ष्मवतन का ये बादलों रूपी उडनखटोला बदल गया है पुष्पक विमान के रूप में...* मैं देवता इस विमान पर सवार सैर कर रहा हूँ अपनी सतयुगी राजधानी की... स्वर्णाभूषणों से सजी हुई मैं अधिकारी आत्मा मालिकपन की स्मृति से अधीनता के सर्व संस्कारों को छोड बाप के दिलतख्तनशीन बन वापस लौट आयी हूँ अपनी उसी देह में, जहाँ से मैं चली थी... *अब गहराई से समझ लिया है कि जिन संस्कारों की मैं मालिक हूँ उनको बदलना और छोडना मेरे लिए सहज है... क्योंकि चेतना मैं हूँ संस्कार नही...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔